अथ सप्तविंशोऽध्यायः

वैवस्वतमनुवंशान्तर्गतमैथिलवंशानुकीर्त्तनम्

सूत उवाच

अनुजस्य विकुक्षेस्तु निमेर्वंशं निबोधत । योऽसौ निवेशयामास परं देवपुरोपमम् ॥ १ ॥
जयन्तमिति विख्यातं गौतमस्याऽऽश्रमाभितः । यस्यान्ववाये जज्ञे वै जनकादृषिसत्तमात् ॥ २ ॥
नेमिर्नाम सुधर्मात्मा सर्वसत्त्वनमस्कृतः । आसीत्पुत्रो महाप्राज्ञ इक्ष्वाकोर्भूरितेजसः ॥ ३ ॥
स शापेन वसिष्ठस्य विदेहः समपद्यत । तस्य पुत्रो मिथिर्नाम जनितः पर्वभिस्त्रिभिः ॥ ४ ॥
अरण्यां मथ्यमानायां प्रादुर्भूतो महायशाः । नाम्ना मिथिरितिख्यातो जननाज्जनकोऽभवत् ॥ ५ ॥
मिथिर्नाम महावीर्यो येनासौ मिथिलाऽभवत् । राजासौ जनको नाम जनकाच्चाप्युदावसुः ॥ ६ ॥

सत्ताईसवाँ अध्याय

(नवासीवाँ अध्याय)

वैवस्वत मनु के वंश के अन्तर्गत मैथिल वंश का वर्णन

श्रीसूतजी ने कहा—तदनन्तर विकुक्षि के अनुज राजा निमि के वंश का वर्णन सुनिये । इन राजा निमि ने गौतम ऋषि के आश्रम के चारों ओर जयन्त नाम से प्रसिद्ध परम सुन्दर एक पुर की स्थापना की थी, जो देवपुर के समान मनोहर नगरी थी । उन्हीं निमि के वंश में ऋषि सत्तम जनक से नेमि नामक परम धर्मात्मा राजा उत्पन्न हुआ, जो सभी प्रजाजनों द्वारा नमस्करणीय था ॥ १-३ ॥

परम तेजस्वी महाराज इक्ष्वाकु से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, वह महर्षि वसिष्ठ के शाप से विदेह (सूक्ष्म शरीर वाला) हो गया । विदेह के अरणी के तीन पर्वो के मंथन करने से महान् तेजस्वी मिथि नामक पुत्र हुए । इस प्रकार अरणिमन्थन से प्रादुर्भूत होने के कारण उन मिथि का जनक नाम प्रसिद्ध हुआ । वे मिथि परम बलवान् राजा थे, उन्हीं के नाम पर मिथिलापुरी की ख्याति हुई । इसी राजा जनक से राजा उदावसु की उत्पत्ति हुई ॥ ३-६ ॥

उदावसोः सुधर्मात्मा जनितो नन्दिवर्धनः । नन्दिवर्धनतः शूरः सुकेतुर्नाम धार्मिकः ॥ ७ ॥
सुकेतोरपि धर्मात्मा देवरातो महाबलः । देवरातस्य धर्मात्मा बृहदुच्छ इति श्रुतिः ॥ ८ ॥
बृहदुच्छस्य तनयो महावीर्यः प्रतापवान् । महावीर्यस्य धृतिमान्सुधृतिस्तस्य चाऽऽत्मजः ॥ ९ ॥
सुधृतेरपि धर्मात्मा धृष्टकेतुः परंतपः । धृष्टकेतुसुतश्चापि हर्यश्वो नाम विश्रुतः ॥ १० ॥
हर्यश्वस्य मरुः पुत्रो मरोः पुत्रः प्रतित्वकः । प्रतित्वकस्य धर्मात्मा राजा कीर्तिरथः सुतः ॥ ११ ॥
पुत्रः कीर्तिरथस्यापि देवमीढ इति श्रुतः । देवमीढस्य विबुधो विबुधस्य सुतो धृतिः ॥ १२ ॥
महाधृतिसुतो राजा कीर्तिराजः प्रतापवान् । कीर्तिराजात्मजो विद्वान्महारोमेति विश्रुतः ॥ १३ ॥
महारोम्णस्तु विख्यातः स्वर्णरोमा व्यजायत । स्वर्णरोमात्मजश्चापि ह्रस्वरोमाऽभवन्नृपः ॥ १४ ॥
ह्रस्वरोमात्मजो विद्वान्सीरध्वज इति श्रुतिः । उद्भिन्ना कृषता येन सीता राज्ञा यशस्विनी ॥
रामस्य महिषी साध्वी सुव्रताऽतिपतिव्रता ॥ १५ ॥

शांशपायन उवाच

कथं सीता समुत्पन्ना कृष्यमाणा यशस्विनी । किमर्थं चाकृषद्राजा क्षेत्रं यस्मिन्बभूव ह ॥ १६ ॥

सूत उवाच

अग्निक्षेत्रे कृष्यमाणे अश्वमेधे महात्मनः । विधिना सुप्रयुक्तेन तस्मात्सा तु समुत्थिता ॥ १७ ॥

उदावसु से धर्मात्मा राजा नन्दिवर्धन की उत्पत्ति हुई । नन्दिवर्धन से वीर एवं धार्मिक सुकेतु की उत्पत्ति हुई । सुकेत् के धर्मात्मा एवं महाबलवान् देवरात उत्पन्न हुए । उन देवरात से धर्मात्मा राजा बृहदुच्छ की उत्पत्ति सुनी जाती है । राजा बृहदुच्छ के पुत्र परम प्रतापी राजा महावीर्य नाम से विख्यात थे, महावीर्य के पुत्र धृतिमान् थे और उनके पुत्र सुधृति हुए । सुधृति के पुत्र परम तपस्वी एवं धर्मात्मा धृष्टकेतु थे । धृष्टकेतु के पुत्र हर्यश्व भी प्रसिद्ध राजा थे ॥ ७-१० ॥

हर्यश्व के पुत्र मरु और मरु के पुत्र प्रतित्वक हुए । प्रतित्वक के पुत्र परम धर्मात्मा राजा कीर्तिरथ थे । राजा कीर्तिरथ के पुत्र देवमीढ़ नाम से प्रसिद्ध थे । देवमीढ़ के पुत्र विबुध और विबुध के पुत्र धृति हुए ॥ ११-१२ ॥

उस राजा महाधृति के पुत्र परम प्रतापशाली राजा कीर्तिराज हुए । कीर्तिराज के पुत्र परम विद्वान् राजा महारोमा नाम से विख्यात थे । राजा महारोमा के पुत्र स्वर्णरोमा हुए । स्वर्णरोमा के पुत्र राजा ह्रस्वरोमा हुए । ह्रस्वरोमा के पुत्र राजा सीरध्वज कहे जाते हैं । वही राजा सीरध्वज एक बार जब पृथ्वी जोत रहे थे उस समय परम यशस्विनी सीता देवी का प्रादुर्भाव हुआ—ऐसी प्रसिद्धि है । वे सीता रामचन्द्र की परम साध्वी, पतिव्रता, सद्व्रतपरायणा पत्नी थीं ॥ १३-१५ ॥

शांशपायन ने कहा—हे सूत जी ! पृथ्वी जोतते समय परम यशस्विनी सीता देवी का प्रादुर्भाव किस प्रकार हुआ? फिर राजा सीरध्वज किस प्रयोजनवश उस क्षेत्र को जोत रहे थे जिसमें सीता की उत्पत्ति हुई ? ॥ १६ ॥

सूत ने कहा—अश्वमेघ यज्ञ के अवसर पर महाराज सीरध्वज ने विधिपूर्वक जिस अग्निक्षेत्र का कर्षण किया, उसी से सीता का प्राकट्य हुआ । उस राजा सीरध्वज से भानुमान् का जन्म हुआ, जो मैथिल नाम से

सीरध्वजात्तु जातस्तु भानुमान्नाम मैथिलः । भ्राता कुशध्वजस्तस्य स काश्याधिपतिर्नृपः ॥ १८ ॥
तस्य भानुमतः पुत्रः प्रद्युम्नश्च प्रतापवान् । मुनिस्तस्य सुतश्चापि तस्मादूर्जवहः स्मृतः ॥ १९ ॥
ऊर्जवहात्सुतद्वाजः शकुनिस्तस्य चाऽऽत्मजः। स्वागतः शकुनेः पुत्रः सुवर्चास्तत्सुतः स्मृतः ॥ २० ॥
श्रुतो यस्तस्य दायादः सुश्रुतस्तस्य चाऽऽत्मजः। सुश्रुतस्य जयः पुत्रो जयस्य विजयः सुतः ॥ २१ ॥
विजयस्य ऋतः पुत्र ऋतस्य सुनयः स्मृतः । सुनयाद्वीतहव्यस्तु वीतहव्यात्मजो धृतिः ॥ २२ ॥
धृतेस्तु बहुलाश्वोऽभूद्बहुलाश्वसुतः कृतिः । तस्मिन्संतिष्ठते वंशो जनकानां महात्मनाम्॥
इत्येते मैथिलाः प्रोक्ताः सोमस्यापि निबोधत ॥ २३ ॥

॥ इति श्रीवायुमहापुराणे वायुप्रोक्ते अनुषङ्गपादे वैवस्वतमनुवंशान्तर्गतमैथिलवंशानुकीर्तनं नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

* * *

विख्यात था । उसका भाई कुशध्वज था, जो काशी का राजा हुआ । उस राजा भानुमान् का पुत्र प्रतापशाली प्रद्युम्न हुआ, उसका पुत्र मुनि था, उन मुनि से ऊर्जवह की उत्पत्ति कही जाती है ॥ १७-१९ ॥

ऊर्जवाह से सुतद्वाज की उत्पत्ति हुई, उसका पुत्र शकुनि हुआ, उस शकुनि का पुत्र स्वागत हुआ, जिसका पुत्र सुवर्चा कहा जाता है । सुवर्चा का पुत्र श्रुत और श्रुत का पुत्र सुश्रुत हुआ । सुश्रुत का पुत्र जय और जय का पुत्र विजय हुआ ॥ २०-२१ ॥

विजय का पुत्र ऋत और ऋत का पुत्र सुनय कहा जाता है । सुनय से वीतहव्य की उत्पत्ति हुई, वीतहव्य का पुत्र धृति हुआ । धृति का पुत्र बहुलाश्व हुआ, बहुलाश्व का पुत्र कृति हुआ । इसी राजा कृति तक महान् प्रतापी जनक नामधारी राजाओं का वंश प्रतिष्ठित माना जाता है । मैथिल नामधारी राजाओं का वर्णन किया जा चुका, अब चन्द्रमा के वंश का भी वर्णन सुनिये ॥ २२-२३ ॥

श्री वायुमहापुराण में वायुप्रोक्त अनुषङ्गपाद में वैवस्वत मनु के वंश के अन्तर्गत मैथिल वंश का वर्णन नामक सत्ताइसवें अध्याय (नवासीवें अध्याय) **की डॉ० सुधाकर मालवीय के आत्मज पं० चित्तरंजन मालवीय कृत सरला हिन्दी पूर्ण हुई ॥ २७ ॥**

* * *